UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 6.125

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि
Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 1.1

January, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

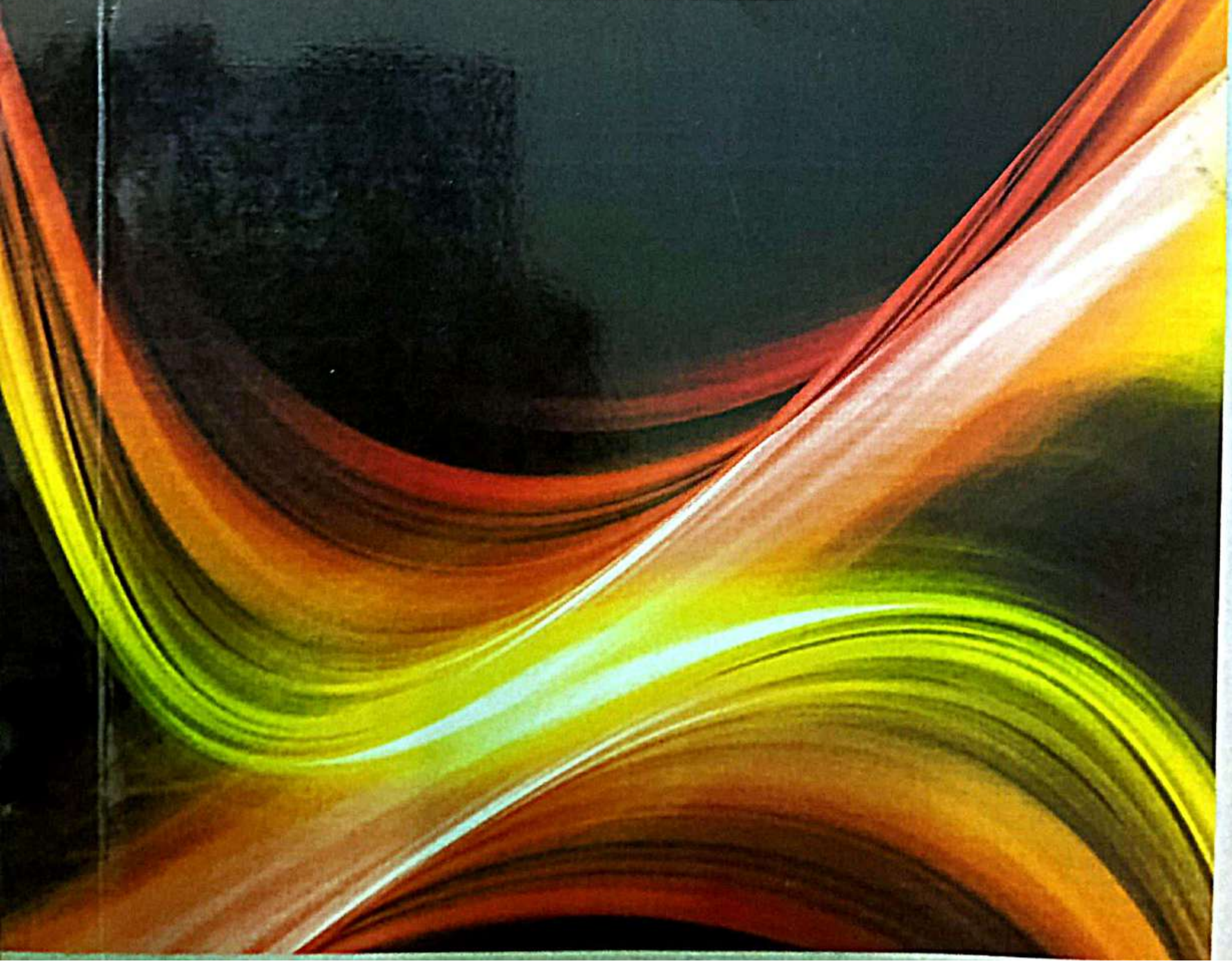

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 1.1 Year - 14 January, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 1.1 Year - 14 January, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

Contents / अनुक्रमणिका

यात्रा आधारित साहित्य यात्रावृत्त और रिपोर्ताज का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ० चन्द्र प्रकाश शर्मा**	1-6
महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका **डॉ० सत्य प्रकाश अंशु**	7-1
स्त्री आत्मकथाओं की अन्तर्वस्तु की अभिव्यक्ति का स्वरूप **डॉ० सुधा त्रिपाठी**	11-1
नागार्जुन : हिन्दी की जातीय चेतना के कवि **डॉ० जितेन्द्र प्रताप**	16-1
कबीर का समाज दर्शन और उसकी प्रासंगिकता **अभिषेक कुमार सिंह**	19-2
स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव : एक अध्ययन **अंजू श्रीवास्तव एवं डॉ० प्रमोद कुमार पाण्डेय**	23-2
रवींद्र कालिया के उपन्यास 'खुदा सही सलामत है' में अभिव्यक्त राजनैतिक पक्ष **अंजू यादव एवं डॉ० रवीन्द्र कुमार सिंह**	27-3
रमणीय चित्रकूट क्षेत्र का सुरम्य लोकसंगीत **आवेश कुमार एवं डॉ० नेहा जोशी**	31-3
स्फोटार्थयोस्सम्बन्धस्तत्र बौद्धर्थसत्तावादखण्डनम् **वद्रीप्रसादगौतमः**	35-3
समकालीन काव्य–चिंतन परिप्रेक्ष्य एवं केदारनाथ सिंह की कविताओं का प्रतिपा **नीशू सिंह एवं डॉ० राकेश सिंह**	40-4
काशीनाथ सिंह के उपन्यासों का प्रतिपाद्य **जूली**	45-4
राजकमल चौधरी के काव्य–संग्रह 'स्वरगंधा' का प्रतिपाद्य **लवली सिंह**	49-5
सामाजिक और पारिवारिक जीवन में संस्कारों का महत्त्व **नेहा सिंह**	55-5
जयशंकर प्रसाद : इतिहास और आधुनिकता का सामंजस्य **मनीष सिंह**	59-6
उत्तर प्रदेश की प्रमुख लोककलाएँ एवं उनसे सम्बंधित लोकचित्रों का स्वरूप **रैनू जायसवाल एवं प्रो० अजय कुमार जेटली**	63-6
वदलते सामाजिक स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में काशीनाथ सिंह के उपन्यासों का प्रतिपाद्य **रमापति चौरसिया एवं डॉ० ज्ञान प्रकाश द्विवेदी**	67-7
केदारनाथ सिंह की कविताओं में अभिव्यक्त समकालीन सामाजिक चिंतन **श्रीकान्त उपाध्याय**	71-7

☞	समकालीन स्त्री–विमर्श और प्रभा खेतान **स्मिता मिश्रा एवं डॉ0 विनोद कुमार सिंह**	75-80
☞	शरद जोशी के व्यंग्य में सामाजिक चेतना का स्वरूप **सुनीता एवं डॉ0 सुधा त्रिपाठी**	81-84
☞	सूरदास की रचनाधर्मिता, संगीत और उनका काव्य **सुमति सिंह एवं डॉ0 दीप्ति सिंह**	85-88
☞	समकालीन हिन्दी कहानी में संवेदना का बदलता स्वरूप **ममता देवी एवं डॉ0 रत्नेश कुमार शुक्ल**	89-93
☞	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रमुख स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्य **श्रीमती चौरसिया**	94-98
☞	पूर्वांचल के मांगलिक कार्यों में चकपुरन की भूमिका और उनके गीतों का महत्त्व वर्तमान समय के सन्दर्भ में **आदित्य घनराज पाण्डेय**	99-100
☞	वास्तुशास्त्र का सामान्य परिचय **डॉ0 दुर्गेश कुमार शुक्ल**	101-102
☞	काशी में सूर्य उपासना का इतिहास–पुरातात्विक साक्ष्यों के आलोक में **डॉ0 प्रज्ञा श्रीवास्तव**	103-106
☞	Problems of Micro and Small Enterprises in India **Dr. Sushil Kumar Singh**	107-113
☞	लोकोन्मुख सांस्कृतिक बोध के कवि ज्ञानेन्द्रपति... **डॉ0 वंशीधर उपाध्याय**	114-118
☞	लेट्लकारस्य वैशिष्ट्यम् **श्रीतेजा नन्दनम्**	119-120
☞	जनपद जौनपुर के विकासखण्ड सिरकोनी में लिंगानुपात का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन **विक्रम भारती एवं डॉ0 शिवलोचन सिंह**	121-124
☞	प्रकृति–पक्ष की दृश्यता का एक अपराजेय कवि **डॉ0 दिनकर सिंह**	125-131
☞	भारतीय शिक्षा के संदर्भ में बौद्ध एवं जैन शिक्षा दर्शन की उपादेयता **अल्का राय एवं प्रो0 पी0एस0 राना**	132-134
☞	संस्कृत संकाय की स्थापना में महामना की दृष्टि एवं प्रासंगिकता **डॉ0 विनीता पाण्डेय**	135-136
☞	जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में न्यायिक अवधारणा **अनूप कुमार**	137-140
☞	भारतीय संगीत में आधुनिक इलेक्ट्रानिक वाद्य यंत्रों की उपयुक्तता **सतेन्द्र**	141-142
☞	जनपद सोनभद्र (उत्तर प्रदेश) में ग्रामीण अधिवासों का एक भौगोलिक अध्ययन **विनीत कुमार**	143-150

☞	प्रभा खेतान के उपन्यासों मे विविध मूल्यों का चित्रण कल्पना यादव	151-154
☞	Moorthy's Quest for Freedom and Empowerment in Raja Rao's *Kanthapura* **Dr. Ekta Sharma**	155-157
☞	उत्तर भारतीय संगीत वाद्यों का विकासक्रम और वर्गभेद : तंत्र वाद्यों के परिप्रेक्ष्य में **डॉ० हंस प्रभाकर रविदास**	158-160
☞	शिवपुराण की महापुराण विरूद की समस्या **पीयूष मिश्र**	161-165
☞	पर्यावरण और महात्मा गाँधी का नजरिया **श्याम सुन्दर**	166-168
☞	नारी मुक्ति की अवधारणा और सामाजिक विडम्बना : विशेष संदर्भ कहानीकार स्वयं प्रकाश **रश्मि निषाद**	169-172
☞	भट्टोजिदीक्षिताभिमतकौण्डभट्टाभिमताधिकरणसप्तम्यर्थविमर्शः **वाचस्पतिः डॉ0 दिव्यचेतनब्रह्मचारी**	173-175
☞	'गोदान' में गाँव और शहर की अन्तःसम्बद्धता **परिमल प्रधान**	176-178
☞	स्त्री विमर्श में लेखन की परंपरा, अतीत और उनके संघर्ष **डॉ0 आलोक कुमार**	179-184
☞	Atmanirbhar Bharat Mission: Envisioning a Sustainable Development Approach **Dr. Niraj Kumar Singh & Dr. Pankaj Singh**	185-192
☞	भारतीय कला में महिला कलाकारों की एक मजबूत पक्ष– चित्रकार गोगी सरोजपाल **राजीव कुमार गुप्ता**	193-196
☞	अपां स्रष्टेत्यत्रसमासनिषेधे दीक्षितजयादित्यमतभेदविमर्शः **डॉ0 यदुवीरस्वरूपशास्त्री**	197-199
☞	हिंदी जगत और डिजिटल साहित्य **संदीप प्रसाद**	200-204
☞	मुर्दहिया और लोकजीवक **डॉ0 नीतू वर्मा**	205-208
☞	T.C. Kamla Dasgupta **Dr. Susmita Nandi**	209-210
☞	Alkazi Foundation's Contribution for Contemporary Photographers **Krishna Singh**	211-214
☞	An Analysis of Equity Participation by National Housing Bank **Dr. Shweta Khemka**	215-220
☞	दलित जीवन का यथार्थ और 'बलचनमा' **प्रतिमा सिंह**	221-225
☞	The Indian Diaspora: Uniting Cultures, Connecting Worlds **Dr. Nidhi Rani Singh & Dr. Gunjan Sachdeva**	226-230

Major Attractions & Challenges of National Education Policy 2020: A Comparative Overview **Dr. Honey Gupta & Dr. Priya Yadav**	231-236
असमिया रेशम बदले जलवायु में **डॉ0 सुरीम किशोर शाही**	237
भारतीय कथा परंपरा में पंचतंत्र **प्रो0 अनिता ओझा**	238-240
अनुराग–बांसुरी में कुछ सूफी तत्व **डॉ0 राकेश पाण्डेय**	241-244
Understanding the Decision-Making Process in Consumer Buying Behaviour: An Insight **Dr. O.P. Gupta, Dr. Ritesh Gaurav & Dr. Manish Kumar Jaiswal**	245-250
गुरु गोविंद सिंह का हिन्दी कविता में योगदान **डॉ0 राकेश कुमार पाण्डेय**	251-252
'रेत–समाधि' : एक परिचय **मेनिका गुप्ता**	253-256
वॉश परम्परा के संवाहक : शान्तनु उकील **डॉ0 अद्वैत कुमार सिंह**	257-260
आदिवासी जीवन एवं समाज **अंजली सिंह**	261-264

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 14, No. 1.1, January 2023
Impact Factor : 6.125
ISSN : 0976-6650

भट्टोजिदीक्षिताभिमतकौण्डभट्टाभिमताधिकरणसप्तम्यर्थविमर्शः

वाचस्पतिः डा0 दिव्यचेतनब्रह्मचारी
व्याकरणविभागः, सम्पूर्णानन्दसंकृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी

भट्टोजिदीक्षितमते कौण्डभट्टमते च अधिकरणसप्तम्यर्थः आश्रयो वर्तते। तथा चोक्तं भट्टोजिदीक्षितेन **"आश्रयोऽवधिरुद्देश्यः सम्बन्धः शक्तरेव वा। यथायथं विभक्त्यर्थः सुपां कर्मेति भाष्यतः"**[1]। तत्र कस्याः विभक्तेः आश्रयोऽर्थः इति जिज्ञासायां वैयाकरणमतोन्मज्जनटीकाकारो वदति **"द्वितीयातृतीयासप्तमीनामाश्रयोऽर्थः"**[2]। तेनेदं समागतं यद् भट्टोजिदीक्षितनये अधारसप्तम्या आश्रयोऽर्थः। तत्र आधारसप्तम्याः आश्रयोऽर्थो भवति इत्यत्र किं प्रमाणमिति चेदुच्यते अधिकरणे सप्तमी विधायकं सूत्रं तावत् सप्तम्यधिकरणे चेति सूत्रम्, अतस्तेनेदं बोधितं भवति यत् सप्तम्याः अधिकरणमर्थः। अधिकरणं च आधारः, स च आश्रयरूप एवेति कृत्वा सप्तम्याः आश्रयोऽर्थ इत्युक्तं भवति। अधिकरणं च कथमाधारः इति चेदुच्यते, अधिकरणसंज्ञाविधायकं सूत्रं तावत् आधारोऽधिरकणम् इति। अस्य सूत्रस्यार्थो भवति- आधारः अधिकरणसंज्ञं स्यात्। तत्र कस्य आधारः इति जिज्ञासायाम् उपस्थितत्वात् क्रियायाः एवाधारो गृह्यते। अयं भावः अत्रापि कारकाधिकारो वर्तते। कारकत्वं च क्रियानिष्ठविशेष्यतानिरूपितप्रकारतासमानाधिकरणविशेष्यतानिरूपिताभेद-सम्बन्धावच्छिन्नप्रकारताश्रयत्वम् इति। यथा देवदत्तो ग्रामं गच्छति इत्यादौ गमनक्रियानिष्ठविशेष्यतानिरूपिता या प्रकारतासमानाधिकरणा विशेष्यता सा च तिङर्थकर्तृनिष्ठैव तादृशविशेष्यतानिरूपिताभेद-सम्बन्धावच्छिन्नप्रकारता देवदत्तनिष्ठा तदाश्रयो देवदत्तः एवेति तस्य कारकत्वमुपपन्नम्। तथा च कारकपदात् क्रियायाः लाभः। अतः उपस्थितत्वात् क्रियायाः आधारोऽत्र गृह्यते। सा च द्विविधा फलात्मिका व्यापारात्मिका च। तत्र साक्षात्तदाधारयोः पराभ्यां कर्तृकर्मसंज्ञाभ्यां बाधात् परम्परया तदाधारस्य अधिकरणसंज्ञा भवति। अत एवोक्तं भट्टोजिदीक्षितेन आधारोऽधिरकणम् इति सूत्रे सिद्धान्तकौमुद्याम् **"कर्तृकर्मद्वारा तन्निष्ठक्रियायाः आधारः कारकमधिकरणसंज्ञः स्यात्"**[3]। शब्दकौस्तुभे वदति दीक्षितः- **"आध्रियन्तेऽस्मिन् क्रिया इत्याधारः। अध्यायन्यायोद्यावसंहारधारावायाश्च [3-3-122] इति सूत्रेण अधिकरणे घञ्प्रत्ययः। क्रियाश्रययोः कर्तृकर्मणोर्धारणात् परम्परया क्रियां प्रति आधारः तत्कारकमधिकरणं स्यात्। कटे आस्ते, स्थाल्यां पचति।स्यादेतत्। साक्षात्क्रियाधारयोः कर्तृकर्मणोरेव कुतो नेयं संज्ञेति चेत्, न, पराभ्यां कर्तृकर्मसंज्ञाभ्यां बाधितत्वात्"**[4]। अत एव भर्तृहरिरप्याह-

कर्तृकर्मव्यवहितामसाक्षाद्धारयत्क्रियाम्।
उपकुर्वत्क्रियासिद्धौ शास्त्रेऽधिकरणं स्मृतम्[5]॥

अत एतेनेदं समागतं यत् परम्परया यः क्रियाश्रयो भवति स एव अधिकरणं भवति। एवं च अधिकरणपदार्थः परम्परया क्रियाश्रयः, तत्र क्रियायाः धातुनैव लाभात् अनन्यलभ्यत्वात् आश्रयमात्रं सप्तम्यर्थ इति भावः। आश्रयत्वं च अखण्डोपाधिरूपं शक्यतावच्छेदकमिति भावः।

अत्र कौण्डभट्टः

कौण्डभट्टनयेऽपि आधारसप्तम्याः आश्रयोऽर्थो वर्तते। अत एव वैयाकरणभूषणसारे वदति सः- **"सप्तम्याः अप्याश्रयोऽर्थः।** अयं सप्तम्यधिकरणे च [पा0 सू0 2-3-36] इति सूत्रात् आधारः"[6]। **तच्च आधारोऽधिकरणम् [पा0 सू0 2-3-36] इति सूत्रात्।** भावः- सप्तम्यधिकरणे चेति सूत्रेण अधिकरणे सप्तमी भवति। तत्र अधिकरणस्वरूपबोधकं सूत्रं च आधारोऽधिकरणमिति तदनुसारम् अधिकरणं नाम आधरः, आधारः, आश्रयः, इत्यनयोश्च आनुपूर्वीकृत एव भेदः, न तु अर्थकृतः, तस्मात् अधिकरणे सप्तमी भवतीति कृत्वा सप्तम्याः अधिकरणमर्थः, अधिकरणं च आधारः, स च आश्रयानतिरिक्तः इति कृत्वा सप्तम्याः आश्रयोऽर्थः इति सिध्यमिति भावः। अत्र सप्तम्याः अधिकरणमर्थः, अधिकरणं च आधारः, स च आश्रयानतिरिक्तः इति कृत्वा सप्तम्याः आश्रयोऽर्थः इति सिध्यमिति भावः। अत्र सप्तम्याः अधिकरणमर्थः, अधिकरणं च आधारः, स च आश्रयानतिरिक्तः इति कृत्वा सप्तम्याः आश्रयोऽर्थः इति सिध्यमिति भावः।

---

1 वैयाकरणमतोन्मज्जनकारिकसंख्या 2/ पत्रसंख्या 1/ प्रकाशनवर्षम् 1998/ प्रकाशकः भारतीयविद्यासंस्थानम्, वाराणसी।
2 वैयाकरणमतोन्मज्जनकारिकसंख्या 2/ पत्रसंख्या 1/ प्रकाशनवर्षम् 1998/ प्रकाशकः भारतीयविद्यासंस्थानम्, वाराणसी।
3 बालमनोरमातत्त्वबोधिनयुतसिद्धान्तकौमुदीपत्रसंख्या 672/ प्रकाशनवर्षम्-2010/ प्रकाशकः मोतीलालबनारसीदासः दिल्ली।
4 शब्दकौस्तुभद्वितीयभागपत्रसंख्या 127/ प्रकाशनवर्षम्-1991/ प्रकाशकः चौखम्भासंस्कृतसीरीजआफिस, वाराणसी।
5 अम्बाकर्त्रीयुतवाक्यपदीयतृतीयकाण्डद्वितीयभागपत्रसंख्या 375/ प्रकाशनवर्षम्-1997/ प्रकाशकः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसी
6 दीपिकायुतवैयाकरणभूषणसारपत्रसंख्या 175/ प्रकाशनवर्षम्-2001/ प्रकाशकः मिथिलासंस्कृतशोधसंस्थानम्, दरभङ्गा।

साक्षादाश्रयभूतं कर्म भवति, व्यापाररूपक्रियायाः साक्षादाश्रयः कर्ता भवति, फलरूपक्रियानिष्पत्त्यव्यवहितपूर्ववर्ति-व्यापाररूपक्रियायाः साक्षादाश्रयभूतं करणं भवतीति कृत्वा तेषामधिकरणसंज्ञा प्राप्ता भवति किन्तु परत्वात् कर्तृकर्मादिसंज्ञाभिः अधिकरणसंज्ञायाः बाधेन परम्परया क्रियाश्रयस्यैव अधिकरणसंज्ञा भवति। तथा चोक्तं कौण्डभट्टेन- **"न चाश्रयत्वमात्रेण कर्तृकर्मकरणानामाधारसंज्ञा स्यात्। स्यादेव यदि ताभिरस्या न बाधः स्यात्। कारके इत्यधिकृत्य विहितसप्तम्याः क्रियाश्रये इत्येव यद्यपि तात्पर्यं तथाप्यत्र कर्तृकर्मद्वारा तदाश्रयत्वमस्त्येव स्थाल्यादेर्भूतलकटादेश्चेति स्थाल्यां पचति भूतले वसति कटे शेते इत्याद्युपपद्यते"**[7]। इति।

अधिकरणकारकस्य क्रियान्वयविचारः

तत्र प्राचीनाः कैयटदीक्षितप्रभृतयः अधिकरणकारकस्य स्ववृत्तिवृत्तित्वरूपपरम्परासम्बन्धेन साक्षादेव क्रियायामन्वय इति स्वीकुर्वन्ति। यथा देवदत्तः कटे आस्ते, इत्यत्र स्वम्- अधिकरणं कटः, तद्वृत्तिः कर्ता देवदत्तः, तद्वृत्तित्वं च आसनक्रियायां वर्तते, तस्मात् स्ववृत्तिवृत्तित्वरूपपरम्परासम्बन्धेन कटः आसनक्रियायामन्वेति। एवं स्थाल्यां तण्डुलं पचति, इत्यादौ स्वम्- अधिकरणं स्थाली, तद्वृत्तिः कर्म तण्डुलः, तद्वृत्तित्वं च विक्लित्तिरूपक्रियायां वर्तते, अतः स्थाली स्ववृत्तिवृत्तित्वरूपपरम्परासम्बन्धेन विक्लित्तिरूपक्रियायामन्वेति।

अथैवं स्वीकारे सति अक्षशौण्डः, इत्यत्र समासो न स्यात्। अयं भावः- अक्षशौण्डः, इत्यत्र अक्षरूपाधिकरणस्य स्ववृत्तिवृत्तित्वरूपपरम्परासम्बन्धेन साक्षादेव क्रियायामन्वये स्वीकारे सति शौण्डपदार्थेन सहान्वयाभावेन अक्षशौण्डयोः परस्परमन्वयाभावात् सामर्थ्याभावेन अक्षस्य शौण्डेन सह समासासम्भव एवेति भावः। इति तु नैव वक्तव्यम्, यतोहि- प्रकृतदोषपरिहाराय प्राचीनाः शौण्डादिपदस्य आसक्तशौण्डरूपेऽर्थे लक्षणां स्वीकृत्य लक्ष्यार्थे शौण्डपदार्थैकदेशे आसक्तिक्रियारूपे अक्षपदार्थान्वयं स्वीकृत्य सामर्थ्यं व्युत्पाद्य समासं स्वीकुर्वन्ति। उक्तं च शब्दकौस्तुभे भट्टोजिदीक्षितेन-**"स्यादेतत् कारकाणां क्रिययैव सम्बन्ध इति तावत्स्थितम्। तदिह अक्षशौण्डः इत्यादौ सप्तम्यर्थः क्वान्वेति क्रियाया अश्रवणात्, सत्यम्, प्रसक्तिरूपा क्रिया वृत्ताविहान्तर्भवति, तद्द्वारकमेव च सामर्थ्यं यथा दध्योदनगुणधानादिषु"**[8]। तत्त्वबोधिनीकारेणाप्यत्र एवमेवोक्तम्- इह आसत्तिरूपाक्रिया वृत्तावन्तर्भवतीति तद्द्वारकं च सामर्थ्यम्। यथा दध्योदनगुडधानादौ, उपसेचनमीश्रीकरणादिद्वारा सामर्थ्यम्। तेन कारकाणां क्रिययैव सम्बन्ध इति नियमस्य न व्यभिचारः।

अयं भावः- दध्ना ओदनः, इति विग्रहे अन्नेन व्यञ्जनम्, इति सूत्रेण समासे सति दध्योदनः, इति रूपं सिध्यति। तत्रायं जायते सन्देहः दध्ना इत्यत्र करणे तृतीया तथा च कारकाणां क्रिययैव सह सम्बन्धात्, उपसिक्तपदादिबोध्यक्रियायामेवान्वयः स्यात् तथा सति ओदनपदार्थेन सह दध्ना पदोपस्थाप्यार्थस्यान्वयाभावेन असामर्थ्यात् ओदनपदेन सह समासो न स्यात्, तथा च अन्नेन व्यञ्जनम्, इति सूत्रं व्यर्थं स्यादतस्तत्र सूत्रसामर्थ्यात् उपसेकक्रियाद्वारासामर्थ्यं सर्वैरपि स्वीक्रियते। तथा च तत्र सामर्थ्यं स्वीकृत्य समासो भवति। अत एवोक्तं भट्टोजिदीक्षितेन दध्ना उपसिक्त ओदनो दध्योदनः। इह वृत्तावुपसेकक्रियान्तर्भवति स्वभावात्। तथैवान्यत्राप्युक्तं तैः इहान्तर्भूतोपसेकक्रियाद्वारा सामर्थ्यम्। अत एव दध्योदनः, इत्यादौ सर्वैरपि क्रियामन्तर्भाव्य सामर्थ्यं स्वीकृत्य समासः स्वीकृतः तथैव प्राचीना अक्षशौण्डः, इत्यादावपि स्वीकुर्वन्ति सप्तमी शौण्डैः, इति सूत्रसामर्थ्यात् अन्यथा सूत्रमिदं व्यर्थं स्यात्। किञ्च अक्षशौण्डस्य धनम् इत्यादौ शौण्डपदस्य शौण्डासक्तरूपार्थे लक्षणाऽवश्यमेव स्वीकरणीया। अन्यथा शौण्डस्य इत्यस्य धनपदार्थे एवान्वयेन कर्तृद्वारापि अक्षरूपाधिकरणस्य क्रियायामन्वयो न सम्भवति। तस्मात् अक्षशौण्डस्य धनम् इत्यादौ लक्षणायाः सर्वैरेव स्वीकरणीयतया तथैव अक्षशौण्डः, इत्यादौ निर्वाहे अधिकरणकारकस्य परम्परया क्रियायामन्वयस्वीकारे साक्षादेवान्वयः स्वीकरणीयः, इति प्राचीनानामभिप्रायः।

अधिकरणभेदाः-

भट्टोजिदीक्षितमते कौण्डभट्टमते च अधिकरणं त्रिविधं वर्तते। तथा चाह भट्टोजिदीक्षितः- **"औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापाकश्चेत्याधारस्त्रिधा"**[9]। शब्दकौस्तुभे वदति- **"त्रिविधं चैतदधिकरणमिति संहितायाम् [6-1-72] इति सूत्रे भाष्ये औपश्लेषिकं वैषयिकमभिव्यापाकञ्चेति। कटे आस्ते, गुरौ वसति तिलेषु तैलमिति"**[10]। कौण्डभट्टोऽपि वदति वैयाकरणभूषणसारे- **"एतच्च त्रिविधम्- औपश्लेषिकम्, वैषयिकम्, अभिव्यापकञ्च। कटे शेते, गुरौ वसति, मोक्षे इच्छा अस्ति, तिलेषु तैलम्, इति। एतच्च संहितायाम् इति सूत्रे भाष्ये स्पष्टम्"**[11]।

अत्र दर्पणकारः-

औपश्लेषिकम्- औपश्लेषिकाधिकरणविषये वदति दर्पणकारः **सामीप्यसम्बन्धनिबन्धनमित्यर्थः।** सामीप्यस्यापि संयुक्तसंयोगरूपतया

7 दीपिकायुतवैयाकरणभूषणसारपत्रसंख्या 175/ प्रकाशनवर्षम्-2001/ प्रकाशकः मिथिलासंस्कृतशोधसंस्थानम्, दरभङ्गा।
8 शब्दकौस्तुभद्वितीयभागपत्रसंख्या 178/ प्रकाशनवर्षम्-1991/ प्रकाशकः चौखम्भासंस्कृतसीरीजआफिस, वाराणसी।
9 बालमनोरमातत्वबोधिनयुतसिद्धान्तकौमुदीपत्रसंख्या 672/ प्रकाशनवर्षम्-2010/ प्रकाशकः मोतीलालबनारसीदासः दिल्ली।।
10 शब्दकौस्तुभद्वितीयभागपत्रसंख्या 127/ प्रकाशनवर्षम्-1991/ प्रकाशकः चौखम्भासंस्कृतसीरीजआफिस, वाराणसी।
11 दीपिकायुतवैयाकरणभूषणसारपत्रसंख्या 177/ प्रकाशनवर्षम्-2001/ प्रकाशकः मिथिलासंस्कृतशोधसंस्थानम्, दरभङ्गा।

संयोगपदेन तस्यापि सङ्ग्रहात्, आधेयव्याप्यतावच्छेदकयत्किञ्चिदवयवकमित्यर्थः। कटे शेते। परम्परया कटाभिन्नाश्रयकः शयनानुकूलव्यापारः। गुरौ वसति, इत्यादीनि उदाहरणानि बोध्यानि। गुरौ वसति शिष्यः, इत्यत्र परम्परया गुर्वभिन्नाश्रयकः शिष्यकर्तृकः वासः, इति च बोधो भवति।

वैषयिकम्- विषयासम्बन्धनिबन्धनमित्यर्थः। मोक्षे इच्छास्ति। परम्परया मोक्षाभिन्नविषयकः सत्तानुकूलो व्यापारः। मोक्षविषयकेच्छा-निष्ठसत्तेति वा बोधः।

अभिव्यापकम्- आधेयव्याप्यतावच्छेदकयावदवयवकमित्यर्थः। यथा तिलेषु तैलम्। दध्नि सर्पिः। परम्परया तिलाभिन्नाश्रयकः तैलनिष्ठसत्तानुकूलो व्यापारः।

अत्र शाङ्करीकारः- उपश्लेषः संयोगादिसम्बन्धस्तत्कृतमधिकरणमौपश्लेषिकमित्यर्थः। विषयतासम्बन्धकृतं वैषयिकम्। सकलावयव-व्याप्तिकृतमभिव्यापाकमित्यर्थः।

अत्र परीक्षाटीकाकारः- उपश्लेषः संयोगस्तत्कृतमित्यर्थः। ततः आगतः इत्यर्थे प्रत्ययः, अत्र उपेत्यविवक्षितं श्लेषमात्रे तात्पर्यम्। यत्र कटे वस्त्राद्यन्तरिते शेते तत्र कटे कर्तुः संयुक्तसंयोगस्य सत्त्वेऽपि तस्य संयोगभिन्नत्वमेव। एवं गुरौ वसति इत्यत्र मासे दीयते मासिकमित्यादौ च बोध्यम्। वैषयिकम् - विषयतासम्बन्धप्रयोज्यम्। अभिव्यापकम्- आधेयत्वनिष्ठावच्छेदकतासम्बन्धावच्छिन्नव्याप्यतानिरूपित-समवायसम्बन्धावच्छिन्नव्यापाकम्। अत्र यावदवयवमादाय व्याप्यव्यापकभाव उपपादनीयः। कटे शेते गुरौ वसतीत्याद्यस्य। मोक्षे इच्छास्तीति द्वितीयस्य। तिलेषु तैलमिति तृतीयस्योदाहरणम्।

अत्र शाब्दबोधः।

स्थाल्यामोदनं गृहे चैत्रः पचति। अत्र स्थाली - ङि, ओदन – अम्, गृह – ङि, चैत्र – सु पच् - ति, इत्येतानि पदानि सन्ति। अत्र सप्तम्यर्थः आश्रयः तत्र प्रकृत्यर्थस्य स्थाल्याः अभेदसम्बन्धेनान्वयः, आश्रयस्य च स्ववृत्तिवृत्तित्वसम्बन्धेनान्वयः। अमर्थः आश्रयः, तत्र ओदनस्याभेदसम्बन्धेनान्वयः, आश्रयस्य धात्वर्थे विक्लित्तौ आधाराधेयभावसम्बन्धेनान्वयः। विक्लित्तेश्च जन्यजनकभावसम्बन्धेन पचिधात्वर्थे अधिश्रयणादिरूपे व्यापारे अन्वयः। गृहपदोत्तरसप्तम्याः आश्रयः अर्थः, तत्र प्रकृत्यर्थस्य गृहस्य अभेदसम्बन्धेनान्वयः। आश्रयस्य च धात्वर्थे व्यापारे स्ववृत्तिवृत्तित्वसम्बन्धेनान्वयः। चैत्रस्य तिबर्थे आश्रये अभेदसम्बन्धेनान्वयः, आश्रयस्य च धात्वर्थव्यापारे आधाराधेयभावसम्बन्धेनान्वयः। ततश्च निरूक्तवाक्यात् स्थाल्यभिन्नाश्रयवृत्तिवृत्तिः ओदनाभिन्नाश्रयवृत्तिः या विक्लित्तिः, तदनुकूलः गृहाभिन्नाश्रयवृत्तिवृत्तिः चैत्राभिन्नाश्रयवृत्तिः अधिश्रयणादिरूपव्यापार इति भावः।

O

Banaras Hindu University, Varanasi

Shodh Drishti

(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

H.No. 498, South Kakarmatta, Near-R.P.F. Barak,
P.O.-B.L.W., Dist.-Varanasi-221004 (U.P.), India
Mob. No. : 9415388337
Website : shodhdrishti.com
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com
shodhdrishti@rediffmail.com

ISSN 0976-6650

ISSN : 2393-8358

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR)
Impact Factor : 6.0

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 2.1 February, 2023

PEER-REVIEWED JOURNAL

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 2.1 February, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 2.1 **February, 2023**

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

Contents / अनुक्रमणिका

▸	Behind the Badge: Police Officers in Bollywood Masterpieces **Dr. Dushyant Kumar Rai**	1-5
▸	Vasudhaiva Kutumbakam **Dr. Shubhra Nag**	6-10
▸	आत्मकथात्मक साहित्य में राहुल सांकृत्यायन की सांस्कृतिक चेतना **डॉ0 सुधा त्रिपाठी**	11-16
▸	गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की काव्यभाषा और शिल्पगत वैशिष्ट्य **अभिषेक कुमार सिंह**	17-20
▸	रवींद्र कालिया के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी का सामाजिक पक्ष **अंजू यादव एवं डॉ0 रवीन्द्र कुमार सिंह**	21-24
▸	नरेश मेहता के खण्डकाव्य 'संशय की एक रात' का प्रतिपाद्य **लबली सिंह**	25-28
▸	उत्तर–आधुनिकता और परम्परा एवं संस्कृति **मनीष सिंह**	29-31
▸	लोकगीतों की परम्परा एवं अवधी साहित्य **नेहा सिंह**	32-34
▸	केदारनाथ सिंह की कविताओं का भाषिक शिल्प **नीशू सिंह एवं डॉ0 राकेश सिंह**	35-39
▸	भारतीय चित्रकला में नारी श्रृंगार का ऐतिहासिक स्वरूप **रेनू जायसवाल**	40-44
▸	केदारनाथ सिंह की कविता और उनकी सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि **श्रीकान्त उपाध्याय**	45-48
▸	स्त्री–अस्तित्व का प्रश्न और प्रभा खेतान का कथा साहित्य **स्मिता मिश्रा एवं डॉ0 विनोद कुमार सिंह**	49-51
▸	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी सशक्तीकरण **श्रीमती चौरसिया**	52-56
▸	सूरदास सारावली की सांगीतिक विशिष्टता एवं साहित्यिक महत्त्व **सुमति सिंह एवं डॉ0 निरंजन कुमार यादव**	57-59
▸	शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य और उनका प्रतिपाद्य **सुनीता एवं डॉ0 सुधा त्रिपाठी**	60-62
▸	Role of Information Technology (IT) Sector in Indian Economy **Shameem Ahmad & Kumari Divya Yadav**	63-67
▸	Capital Punishment in Rousseau's Contractarian Position **Kumar Dev Dutt**	68-72
▸	ग्रामीण क्षेत्र के संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन का अध्ययन **प्रिया सिंह एवं डॉ0 विमा सिंह पटेल**	73-76

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 10, No. 2.1, February, 2023
ISSN : 2393-83

Contents / अनुक्रमणिका

▸	Behind the Badge: Police Officers in Bollywood Masterpieces **Dr. Dushyant Kumar Rai**	1-5
▸	Vasudhaiva Kutumbakam **Dr. Shubhra Nag**	6-10
▸	आत्मकथात्मक साहित्य में राहुल सांकृत्यायन की सांस्कृतिक चेतना **डॉ0 सुधा त्रिपाठी**	11-16
▸	गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की काव्यभाषा और शिल्पगत वैशिष्ट्य **अभिषेक कुमार सिंह**	17-20
▸	रवींद्र कालिया के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी का सामाजिक पक्ष **अंजू यादव एवं डॉ0 रवीन्द्र कुमार सिंह**	21-2
▸	नरेश मेहता के खण्डकाव्य 'संशय की एक रात' का प्रतिपाद्य **लबली सिंह**	25-2
▸	उत्तर–आधुनिकता और परम्परा एवं संस्कृति **मनीष सिंह**	29-3
▸	लोकगीतों की परम्परा एवं अवधी साहित्य **नेहा सिंह**	32-3
▸	केदारनाथ सिंह की कविताओं का भाषिक शिल्प **नीशू सिंह एवं डॉ0 राकेश सिंह**	35-3
▸	भारतीय चित्रकला में नारी श्रृंगार का ऐतिहासिक स्वरूप **रेनू जायसवाल**	40-4
▸	केदारनाथ सिंह की कविता और उनकी सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि **श्रीकान्त उपाध्याय**	45-4
▸	स्त्री–अस्तित्व का प्रश्न और प्रभा खेतान का कथा साहित्य **स्मिता मिश्रा एवं डॉ0 विनोद कुमार सिंह**	49-5
▸	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी सशक्तीकरण **श्रीमती चौरसिया**	52-5
▸	सूरदास सारावली की सांगीतिक विशिष्टता एवं साहित्यिक महत्त्व **सुमति सिंह एवं डॉ0 निरंजन कुमार यादव**	57-5
▸	शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य और उनका प्रतिपाद्य **सुनीता एवं डॉ0 सुधा त्रिपाठी**	60-6
▸	Role of Information Technology (IT) Sector in Indian Economy **Shameem Ahmad & Kumari Divya Yadav**	63-6
▸	Capital Punishment in Rousseau's Contractarian Position **Kumar Dev Dutt**	68-7
▸	ग्रामीण क्षेत्र के संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन का अध्ययन **प्रिया सिंह एवं डॉ0 विमा सिंह पटेल**	73-7

▸	Understanding the Sociology of Buying Behaviour: Exploring Social Factors that Influence Individuals Purchasing Decisions **Nidhi Srivastava**	77-82
▸	धूमिल की कुछ टूटी–फूटी कविताएँ **पूनम राय**	83-88
▸	Rewriting Myth: A Discourse on Kavita Kane's *Sarasvati's Gift* **Vinod Kumar Yadav & Dr. Pragya Srivastava**	89-92
▸	Parthenium Hysterophorus L. Rhizospheric Microbes to Enhance Drought Tolerance **Ankita Singh & Dr. Neeraj Kumar Dubey**	93-100
▸	Effect of Two Different Program of Yogic Practice on Cardio Respiratory Endurance among School Boys **Dr. Sanjeev Kumar Yadav & Dinesh Minz**	101-103
▸	Assessing the Impact of Isolated Yogic Practice with and Without Pranayam Practice on Flexibility among School Girls **Shivangi Suryavanshi & Dr. Dhananjay Jain**	104-106
▸	महिलानां विकासाय बृहदारण्यकोषनिदः योगदानं **डॉ० विनीता पाण्डेय**	107-109
▸	नयी पीढ़ी : नयी दृष्टि (बुजुर्गों के सन्दर्भ में) **डॉ० गौरव तिवारी एवं सुधा पाण्डेय**	110-114
▸	मत्स्य पुराण में वास्तु सिद्धान्त **ओम प्रकाश रावल एवं डॉ० योगेन्द्र भानु**	115-118
▸	फोटोग्राफी और कैमरे का बदलता स्वरूप **पंकज कुमार गौतम**	119-122
▸	Performance Evaluation of Selected Microfinance Institutions in Varanasi – An Empirical Analysis **Dr. F.B. Singh & Devchand**	123-130
▸	*The Merchant of Venice*: Exploring the Themes of Justice, Prejudice, and Power **Dr. Ekta Sharma**	131-134
▸	Financial Inclusion and Financial Wellbeing through Financial Literacy of Underserved Indians **Dr. Sushil Kumar Singh & Pradeep Kumar Prajapati**	135-142
▸	आकाशवाणी : सांगीतिक लोक प्रसारक **प्रो० शर्मिला टेलर एवं पल्लवी खरे**	143-146
▸	भारतीय राजनीति में कांशीराम का योगदान **सत्येन्द्र कुमार**	147-148
▸	स्वच्छता के परिदृश्य में बदलाव और जन आंदोलन का निर्माण **श्याम सुन्दर**	149-150
▸	दूबेपुर विकासखण्ड (सुलतानपुर जनपद) में सेवा केन्द्रों की भूमिका **डॉ० रवि कुमार**	151-154

▸	समाज पर विज्ञापन का प्रभाव महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में **डॉ0 दीपिका यादव**	155-157
▸	पर्यावरण को प्रभावित करने वाले धरातलीय कारकों का अध्ययन **डॉ0 संतोष कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह**	158-162
▸	Indianness Approach in Amrita Sher-Gil's Art **Ashita Gupta**	163-168
▸	विविधशास्त्राभिमतसम्प्रदानविभक्त्यर्थविचारः **वाचस्पतिः दिव्यचेतनब्रह्मचारी**	169-174
▸	प्रतिरोध की कला, विश्व युद्ध, आजादी का आंदोलन, विभाजन व आपदाएँ "सोमनाथ होर के सन्दर्भ में" **डॉ0 मिथुन कुमार दत्ता**	175-179
▸	भारत में स्त्री वेश्यावृत्ति व्यवसाय : विविध आयाम **डॉ0 पंकज सिंह एवं सुबोध कान्त**	180-184
▸	कामगार श्रमिकों की यथार्थ अभिव्यक्ति और अरुण कमल की कविता संसार **डॉ0 आलोक कुमार**	185-188
▸	अज्ञेय का कवि कर्म **डॉ0 अमरजीत राम**	189-194
▸	Importance of Income Recognition and Asset Classification (IRAC) Norms Related Auditing of Banks **Dr. Amit Agrawal & Jyotsna Agrawal**	195-200
▸	प्राचीन भारतीय न्यायिक अवधारणा व विकास एवं समकालीन समाज पर प्रभाव **डॉ0 किरण कुमार सिंह**	201-204
▸	समाजीकरण की संस्था : माडिया जनजाति के युवा गृह "घोटूल" **डॉ0 रामकुमार**	205-208
▸	नयी सदी की कविता में सांस्कृतिक मूल्य **डॉ0 प्रद्योत कुमार सिंह**	209-212
▸	Optimization of Education: Promotion of Wellness **Dr. Satya Prakash**	213-216
▸	A Study of the Emotional Intelligence of Rural and Urban Students **Suman Kushwaha & Prof. Samar Bahadur Singh**	217-220
▸	पशु अधिकारों के प्रकटीकरण में जनसंचार का उपयोग **नीलिमा**	221-223
▸	ग्रामीण मंदगति छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 जय प्रकाश दुबे एवं अखिलेश कुमार सिंह**	224-226
▸	'आपका बंटी' का आधुनिक परिप्रेक्ष्य **दिनेश कुमार यादव एवं डॉ0 प्रणव कुमार गौरव**	227-228
▸	An Analytical Study on CSR Activities of Public Sector Undertakings in India and its Financial Significance **Dr. Satyarth Bandhal**	229-234

▸	संगीतशास्त्र एवं प्रयोगपक्ष के मध्य विषयगत परिभाषाओं की सेतु भूमिका **डॉ0 शिवानी शुक्ला**	235-236
▸	The Evolution and Significance of Movie Posters in Indian Cinema **Shubham Kumar Chauhan & Dr. Ashish Kumar Gupta**	237-242
▸	भारतीय संगीत की विविध शिक्षण पद्धतियाँ **डॉ0 पंकज शर्मा**	243-246

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 10, No. 2.1, February, 2023
Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

विविधशास्त्राभिमतसम्प्रदानविभक्त्यर्थविचारः

वाचस्पतिः दिव्यचेतनब्रह्मचारी
व्याकरणविभागः, सं0 सं0 वि0वि0, वाराणसी

कणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम् –इतिरीतिमादाय तत्रादौ कणादमुनिमार्गगाणां मतमुस्थापयामि-

तथा हि

जगदीशाभिमतसम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शः-

आचार्यस्य जगदीशस्य मते सम्प्रदाने समागतचतुर्थीविभक्तेः सम्प्रदानत्वमर्थो वर्तते। यतोहि- सम्प्रदाने चतुर्थीविधायकं सूत्रं वर्तते चतुर्थी सम्प्रदाने इति। अत्र च सूत्रे सम्प्रदाने, इत्यत्र भावप्रधाननिर्देशो वर्तते लाघवात्। तथा च सूत्रस्यार्थो भवति- सम्प्रदानत्वे चतुर्थी विभक्तिः भवति। तस्मादुक्तप्रामाण्यात् सिध्यति सम्प्रदानत्वं चतुर्थीविभक्तेरर्थः। सम्प्रदानत्वं च किमिति जिज्ञासायामाह-

गत्यादिभिन्ने धात्वर्थे चतुर्थ्या विग्रहस्थया।
यः स्वार्थो बोधनीयस्तत् सम्प्रदानत्वमीरितम्[1]॥

अन्वयः- विग्रहस्थया चतुर्थ्या गत्यादिभिन्ने धात्वर्थे यः स्वार्थो बोधनीयः तत् सम्प्रदानत्वम् ईरितम्।

कारिकार्थं प्राह जगदीशः-**"गत्यादिभिन्ने यद्धातूपस्थाप्ये यादृशार्थे विग्रहस्थचतुर्थ्या यः स्वार्थो बोधयितुं शक्यते स तद्धातूपस्थाप्यतादृशक्रियायां सम्प्रदानत्वमुच्यते"**[2]। अर्थात् यस्मात् धातोः उपस्थाप्ये गत्यादिभिन्ने यादृशे अर्थे विग्रहस्थचतुर्थ्या यः स्वकीयः अर्थः अनुभाव्यते सः चतुर्थ्यर्थ एव तस्मात् धातोः उपस्थाप्ये तादृशे क्रियारूपे अर्थे सम्प्रदानत्वं कारकम् इत्युच्यतोयथा ब्राह्मणाय वशिष्ठाय दानं धनस्य इत्यत्र चतुर्थ्यर्थः प्रतियोगित्वं अर्थः तत्र प्रतियोगित्वे ब्राह्मणस्य वशिष्ठस्य निष्ठत्वसम्बन्धेनान्वयो भवति। ददातेर्थः स्वत्त्वजनकत्यागः, तत्र स्वत्त्वे प्रतियोगित्वस्य आश्रयत्वसम्बन्धेनान्वयो भवति, तत्रैव स्वत्त्वे धनस्य षष्ठ्यर्थवृत्तित्वसम्बन्धेनान्वयो भवति, तथा चोक्तवाक्यस्य ब्राह्मणाभिन्नवशिष्ठप्रतियोगिकधनवृत्ति-स्वत्त्वजनकत्यागः, इत्यर्थो जायते, अत्र ब्राह्मणपदोत्तरचतुर्थ्या गत्यादिभिन्ने दाधात्वर्थे स्वत्वे प्रतियोगित्वं बोध्यते, तस्मात् तदेव प्रतियोगित्वमत्र सम्प्रदानत्वमिति भावः। अथवा ब्राह्मणपदोत्तरचतुर्थ्या निरूपितत्वमर्थः। तदा चोक्तवाक्यस्यार्थो भवति ब्राह्मणनिरूपितधनवृत्तिस्वत्त्वजनकत्यागः, इति, तदा निरूपितत्वं सम्प्रदानमिति भावः। तथा चोक्तं जगदीशेन- **"ब्राह्मणाय दानं धनस्येत्यादौ ददातेः स्वत्त्वजनकः त्यागोऽर्थस्तन्निविष्टे च स्वत्त्वे ब्राह्मणादेः प्रतियोगित्वं निरूपितत्वं वा चतुर्थ्या बोध्यते इति तदेव तत्र सम्प्रदानत्वम्, ब्राह्मणप्रतियोगिकं ब्राह्मणनिरूपितं वा यद्धनवृत्ति स्वत्त्वं तज्जनकस्त्याग इत्येवं तत्र प्रत्ययात्"**[3]।

अत्र शाब्दबोधः।

राजा विप्राय धनं ददाति। इत्यत्र ददातेः स्वत्वजनकत्यागो वाच्यः। विप्रपदोत्तरचतुर्थीविभक्तेरर्थः प्रतियगित्वं निरूपितत्वं चतुर्थ्यर्थः। तिबर्थः कृतिः। तत्र चतुर्थीविभक्त्यन्तार्थस्य विप्रप्रतियोगित्वस्य धात्वर्थे स्वत्वे अन्वयः। तत्रैव च द्वितीयान्तार्थस्य धनवृत्तित्वस्यान्वयः। त्यागस्य च तिबर्थकृतौ अन्वयः। कृतेश्च प्रथमान्तार्थे राज्ञि आश्रयत्वसम्बन्धेनान्वयः। ततश्चोक्तवाक्यात् विप्रप्रतियोगिकधनवृत्तिस्वत्वजनकत्यागानुकूलकृतिमान् राजा यदा च निरूपितत्वं चतुर्थीविभक्तेरर्थ इति पक्षस्तदा विप्रनिरूपितधनवृत्ति-स्वत्वजनकत्यागानुकूलकृतिमान् राजा।

अथ गदाधराभिमतसम्प्रदानस्वरूपविमर्शः- **सम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शश्च।**

गदाधरेण व्युत्पत्तिवादे स्वाभिमतं सम्प्रदानस्य स्वरूपं प्रतिपादितम्। तत्र हि वदति सः- **"सम्प्रदानत्वं च मुख्यभाक्तसाधारणं क्रियाकर्मसम्बन्धितया कर्त्रभिप्रेतत्वम्"**[4]। अर्थात् क्रियाया यत्कर्म तत्सम्बन्धिरूपेण यत्कर्तुः अभिप्रेतं वर्तते तदेव सम्प्रदानं भवति। अत्र क्रियाकर्मत्वं नाम क्रियाजन्यफलाश्रयत्वम्, तद्वच्च क्रियाकर्म तस्य सम्बन्धश्चात्र कर्मनिष्ठफलभागित्वरूपं विवक्षितं वर्तते, कर्तुरभिप्रेतत्वं नाम कर्तुरिच्छाविषयत्वम्। तथा च क्रियाजन्यं यत्फलं तद्भागित्वेन यो हि कर्तुः इच्छाविषयः तत्सम्प्रदानमिति सिध्यति। तथा चोक्तमपि गदाधरेण- **"क्रियाकर्मत्वं च क्रियाजन्यफलशालित्वम्। तद्वता सम्बन्धश्च तन्निष्ठफलभागित्वमेव। तथा च क्रियाजन्यफलभागितया कर्तुरिच्छाविषयत्वं पर्यवसन्नम्"**[5]। इदं च लक्षणं भगवतः पाणिने सम्मतमपि भगवान् पाणिनिः सम्प्रदानसंज्ञाविधायकं सूत्रं कृतवान् "कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्"इति, अत्र यमभिप्रैति, इत्यस्य यम् अभिसम्बद्धुम् इच्छति इत्यर्थः, तथा च सूत्रस्यार्थो भवति, कर्ता कर्मणा सह यम् अभिसम्बद्धुम् इच्छति तत्सम्प्रदानसंज्ञं भवतीति। चाह गादाधरः- **"कर्मणा**

1 सटीकशब्दशक्तिप्रकाशिकापत्रसंख्या 306/ प्रकाशनवर्षम्-2007/ प्रकाशकः चौखम्बाप्रकाशनम्, वाराणसी।
2 सटीकशब्दशक्तिप्रकाशिकापत्रसंख्या 306/ प्रकाशनवर्षम्-2007/ प्रकाशकः चौखम्बाप्रकाशनम्, वाराणसी।
3 सटीकशब्दशक्तिप्रकाशिकापत्रसंख्या 303/ प्रकाशनवर्षम्-2007/ प्रकाशकः चौखम्बाप्रकाशनम्, वाराणसी।
4 विद्वन्मनोरमायुतव्युत्पत्तिवादद्वितीयभागपत्रसङ्ख्य 77/ प्रकाशनवर्षम्-2012/ प्रकाशकः राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरूपतिः।
5 विद्वन्मनोरमायुतव्युत्पत्तिवादद्वितीयभागपत्रसङ्ख्य 77/ प्रकाशनवर्षम्-2012/ प्रकाशकः राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरूपतिः।

यमभिप्रैतीत्यस्य कर्मणा यमभिसम्बद्धुमिच्छतीति शाब्दिकैर्विवरणाद् उक्तस्थले त्यागरूपक्रियजन्यगोनिष्ठ-स्वत्वफलितेच्छा दातुरिच्छाविषयो ब्राह्मण इति तस्य सम्प्रदानत्वम्"[6]।

अथ यदि सम्प्रदानस्य निरुक्तं लक्षणं स्वीक्रियते चेत् कर्मसम्प्रदानयोरविशेषापत्तिः। भेदः उच्यते- फलाश्रयतयेष्टत्वं कर्मत्वम्, यथा चैत्रः ग्रामं गच्छतीत्यादौ गमनजन्यसंयोगरूपफलाश्रयतया ग्रामस्येष्टत्वात् तस्य कर्मत्वम्। फलसम्बन्धितयेष्टत्वं सम्प्रदानत्वम्, यथा राजा विप्राय गां ददातीत्यादौ दानरूपक्रियाजन्यं यद् गोनिष्ठं स्वत्वं फलं तत्सम्बन्धितया तादृशस्वत्वनिरूपकतया विप्रस्य कर्तुरिष्टत्वात् तस्य सम्प्रदानत्वमिति भावः। एवं च धात्वर्थतावच्छेदकफलाश्रयतया इच्छाविषयत्वं कर्मत्वम्। धात्वर्थतावच्छेदक-फलसम्बन्धितया इच्छाविषयत्वं सम्प्रदानत्वम्, इति फलितम्, तथा च न पर्यायत्वमिति भावः। तथा चोक्तं गदाधरेण- **"मैवम्। फलाश्रयतयेष्टत्वमेव हि कर्मत्वम्। फलसम्बन्धितयेष्टत्वं सम्प्रदानत्वम्। ब्राह्मणादिश्च न त्यागजन्यस्वत्वाश्रयतया दातुरिष्टः , अपितु तन्निरूपकतयैव, अतो न तस्य कर्मता"**[7]।

अथ पत्ये शेते, इत्यत्र शीङ्धातोः अकर्मकत्वात् धात्वर्थतावच्छेदकफलाप्रसिद्ध्या तद्घटितसम्प्रदानत्वं कथं पत्युः स्यादिति चेदुच्यते- धात्वर्थतावच्छेदकफलाश्रयत्वभिन्नो यः फलसम्बन्धः तद्वत्तया इच्छाविषयत्वं सम्प्रदानत्वमित्यत्र भेदप्रतियोगिकोटौ धात्वर्थतावच्छेदके फलत्वं न निवेश्यते। तथा च धात्वर्थतावच्छेदकनिरूपिताश्रयत्वभिन्नो यः फलसम्बन्धः तत्प्रकारकेच्छाविषयत्वं सम्प्रदानत्वम्। पत्ये शेते इत्यत्र धात्वर्थतावच्छेदकं शयनत्वं तन्निरूपिताश्रयत्वभिन्नः यः फलसम्बन्धः शयनजन्यप्रीत्यादिसम्बन्धः तद्वत्त्वेनेच्छाविषयत्वात् पत्युः सम्प्रदानत्वोपपत्तिः। ब्राह्मणाय गां ददातीत्यादौ तु धात्वर्थतावच्छेदकं स्वत्वं तदाश्रयताभिन्नः सम्बन्धः स्वत्वनिरूपकत्वं तत्प्रकारकेच्छाविषयत्वात् ब्राह्मणस्य सम्प्रदानत्वम्।

अथ गदाधराभिमतसम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शः

चरित्रःब्राह्मणाय गां ददाति इत्यादौ निरूपितत्वप्रकारकेच्छाविषयत्वं चतुर्थ्यर्थः। एवं च प्रकृतवाक्ये दाधात्वर्थः स्वत्वजनकत्यागः, गामिति द्वितीयान्तस्य गोवृत्तित्वमर्थः। तस्य च स्वत्वे अन्वयः। निरूपितत्वप्रकारकेच्छाविषयत्वरूपचतुर्थ्यर्थैकदेशे निरूपितत्वे प्रकृत्यर्थस्य ब्राह्मणस्य निष्ठत्वसम्बन्धेनान्वयः, चतुर्थ्यर्थस्य च स्वत्वे अन्वयः। तथा चोक्तवाक्यात् ब्राह्मणनिष्ठनिरूपितत्वप्रकारकेच्छाविषयभूतं गोनिष्ठं यत्स्वत्वं तज्जनको यो हि त्यागः तदनुकूलकृतिमान् चरित्रः, इति बोधः। ब्राह्मणनिष्ठनिरूपितत्वप्रकारिका चेच्छा ब्राह्मणनिरूपितं गोनिष्ठं स्वत्वं भवतु इत्याकारा। तथा चाह गदाधरः- **"एवं च ब्राह्मणाय गां ददातीत्यादौ ब्राह्मणनिरूपितत्वेन स्वेच्छाविषयगोनिष्ठस्वत्वजनकत्यागकर्तेति बोधः। निरूपितत्वेन कर्तुरिच्छाविषयत्वं द्वितीयान्तार्थगोवृत्तित्वान्वयि-धात्वर्थतावच्छेदकस्वत्वान्वयि-चतुर्थ्यर्थः। स्वत्वजनकत्यागश्च ददात्यर्थः"**[8]।

पत्नी पत्ये शेते। पतिनिष्ठत्वप्रकारकस्वेच्छाविशेष्यप्रीतिजनकशयनानुकूलकृतिमती भार्या।

नारदाय रोचते कलहः। इत्यत्र रुचिधातोः प्रीतिजनकत्वमर्थः। चतुर्थीविभक्तेः वृत्तित्वमर्थः। आख्यातार्थः आश्रयत्वम्। तत्र चतुर्थ्यर्थे नारदायस्यान्वयः। चतुर्थीविभक्तेरर्थस्य वृत्तित्वस्य धात्वर्थैकदेशे प्रीतौ अन्वयः। प्रीतिजनकत्वस्य च आख्यातार्थे आश्रयत्वे अन्वयः। आश्रयत्वस्य च प्रथमान्तार्थे कलहे अन्वयः। ततश्चोक्तवाक्यात् नारदवृत्तिप्रीतिजनकताश्रयः कलहः, इति बोधो भवति।

चैत्रः पुष्पेभ्यः स्पृहयति। पुष्पपदोत्तरचतुर्थीविभक्तेरर्थो विषयित्वम्। तत्र पुष्पस्य निरूपितत्वसम्बन्धेनान्वयः। स्पृहिधातोः इच्छार्थः, तत्र विषयित्वस्याश्रयत्व-सम्बन्धेनान्वयः। इच्छायाश्च प्रथमान्तार्थे आश्रयत्वसम्बन्धेनान्वयः। ततश्चोक्तवाक्यात् पुष्पनिरूपितविषयित्वाश्रयेच्छाश्रयः चैत्रः इति बोधः। पुष्पविषयकेच्छावांश्चैत्र इति यावात्। एवं पिता पुत्राय क्रुद्ध्यति, इति वाक्यस्य पुत्रनिरूपितविषयित्वाश्रयक्रोधवान् पिता, इत्याकरकबोधो भवति।

अथ गागाभट्टाभिमतसम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शः-

मीमांसकमते चतुर्थी सम्प्रदाने इति पाणिनिसूत्रप्रामाण्यात् सम्प्रदानं चतुर्थीविभक्त्यर्थः। तत्र गागाभट्टेन भाट्टचिन्तामणिग्रन्थे प्राचीनमीमांसकानां मतं नवीनमीमांसकाना मतं च प्रतिपादितम्। तत्र प्राचीनमतं प्राह गागाभट्टः- **"सम्प्रदानं चतुर्थ्यर्थः। चतुर्थी सम्प्रदाने चतुर्थी इति सूत्रात्"**[9]। तत्र सम्प्रदानत्वं किमिति जिज्ञासां प्राह गागाभट्टः- **"सम्प्रदानत्वं च धात्वर्थकर्मणा व्याप्यमानत्वम्। व्याप्यमानत्वमभिप्रेयमाणत्वम्। धात्वर्थकर्मजन्यव्यापारोद्देश्यत्वमिति यावत्"**[10]। एवं च गागाभट्टानुसारं प्राचीनमते धात्वर्थकर्मजन्यव्यापारोद्देश्यत्वं सम्प्रदानत्वमिति लक्षणं प्रतिफलति। यथा राजा विप्राय गां ददाति, इत्यत्र धातुः ददातिः तदर्थः, परस्वत्वरूपफलम्, तत्कर्म गौः तज्जन्यः पयोदोहनादिव्यापारः तदुद्देश्यत्वं विप्रस्यास्तीति भवति विप्रस्य सम्प्रदानत्वमिति भावः। तथा च तस्य सम्प्रदानत्वं सिध्यति, ततश्च सिद्ध्यति चतुर्थीविभक्तिः। तथा चाह गागाभट्टः- **"यथा विप्राय गां ददाति दानकर्मीभूतगोजन्यपयोदोहनादिव्यापारोद्देश्यत्वाद्विप्रयस्य सम्प्रदानत्वम्"**[11]।

---

6 विद्वन्मनोरमायुतव्युत्पत्तिवादद्वितीयभागपत्रसङ्ख्य 40/ प्रकाशनवर्षम्-2012/ प्रकाशकः राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरूपतिः।
7 विद्वन्मनोरमायुतव्युत्पत्तिवादद्वितीयभागपत्रसङ्ख्य 80/ प्रकाशनवर्षम्-2012/ प्रकाशकः राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरूपतिः।
8 विद्वन्मनोरमायुतव्युत्पत्तिवादद्वितीयभागपत्रसङ्ख्य 81/ प्रकाशनवर्षम्-2012/ प्रकाशकः राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरूपतिः।
9 समयूखभाट्टचिन्तामणिपत्रसंख्या 99/ प्रकाशनवर्षम्-1933/ प्रकाशकः चौखम्बासंस्कृतसीरिजः, वाराणसी।
10 समयूखभाट्टचिन्तामणिपत्रसंख्या 99/ प्रकाशनवर्षम्-1933/ प्रकाशकः चौखम्बासंस्कृतसीरिजः, वाराणसी।
11 समयूखभाट्टचिन्तामणिपत्रसंख्या 100/ प्रकाशनवर्षम्-1933/ प्रकाशकः चौखम्बासंस्कृतसीरिजः, वाराणसी।

सम्प्रदानविषये नवीनमतं प्रतिपादयितुमाह गागाभट्टः- अभिनवास्तु **"दृष्टद्वारकधात्वर्थोद्देश्यत्वं सम्प्रदानत्वम्। धात्वर्थजन्यदृष्टफलशालित्वमिति यावत्"**[12]। तत्फलं सकर्मकेषु धात्वर्थतावच्छेदकम्, अकर्मकेषु धात्वर्थजन्यम्। सूत्रस्थकर्मणेति पदस्य धात्वर्थेनेत्यर्थः। तेन विप्राय गां ददाति, पत्ये शेते, इत्यादिषु विप्रनिष्ठस्वत्वोत्पत्त्याद्युद्देश्यको दानानुकूलो व्यापारः, पतिनिष्ठसुखोद्देश्यकशयनानुकूलो व्यापार इति बोध इति सर्वत्र मुख्यमेव सम्प्रदानत्वम्। दृष्टद्वारकधात्वर्थोद्देश्यत्वादेव कर्मकारकापेक्षया सम्प्रदानस्य प्राधान्यम्। अत एव मैत्रावरूणाय दण्डं प्रयच्छति इत्यत्र दण्डदानस्य चतुर्थीश्रुत्या दृष्टार्थत्वं सिद्धान्तितम् इति वदन्ति।

अथ खण्डदेवाभिमतसम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शः-

खण्डदेवः- भाट्टतन्त्ररहस्ये स्वमतं प्रतिपादयितुमाह – **"विप्राय गां ददातीति वाक्यात् विप्रसम्प्रदानकं गोकर्मकं दानमिति बोधोदयाद् देयद्रव्यनिष्ठस्वत्वनिरूपकत्वरूपम्, तत्समनियतमखण्डोपाधिरूपमेव वा सम्प्रदानत्वं युक्तमाश्रयितुम्। तदेव च शाक्तश्चतुर्थ्यर्थः"**[13]। अयं भावः- खण्डदेवेन सम्प्रदानस्य द्विधा प्रतिपादनं कृतमेकं सखण्डरूपेण अपरञ्चाखण्डरूपेण । तत्र सखण्डसम्प्रदानस्य लक्षणं प्रोक्तम्- देयद्रव्यनिष्ठस्वत्वनिरूपकत्वं सम्प्रदानत्वम् इति। यथा विप्राय गां ददाति इत्यत्र देयद्रव्यं गौः तन्निष्ठं स्वत्वं तन्निरूपकत्वं विप्रे वर्तते, अतस्तस्य सम्प्रदानत्वमिति भावः। परन्तु एवं सम्प्रदानस्य सखण्डत्वे स्वीकृते सति गौरवं स्यादिति कृत्वा तस्य अखण्डस्वरूपमाह- तत्समनियतमखण्डोपाधिरूपमेव वा सम्प्रदानत्वमिति। अर्थात् देयद्रव्यनिष्ठस्वत्वनिरूपक-त्वसमनियतः कश्चिद् घटत्वादिवद् अखण्डः धर्म एव सम्प्रदानत्वमिति भावः। तदेव सम्प्रदानत्वं च सम्प्रदानचतुर्थीविभक्तेरर्थः। खण्डदेवस्तु सर्वत्र मुख्यसम्प्रदानतां नाङ्गीककरोति। वृक्षादीनां भाक्तमेव सम्प्रदानत्वमिति तस्याशयः। विप्राय गां ददाति इति वाक्यात् विप्रसम्प्रदानकं गोकर्मकं दानम् इत्येव शाब्दबोधोदयात्। खण्डोपाधिस्वीकारे पदार्थैकदेशफले प्रकृत्यर्थान्वयादिदोषापत्तेः। तादृशचतुर्थ्यर्थसम्प्रदानत्वे प्रकृत्यर्थस्याधेयत्वेनान्वयः।

श्रीभट्टोजिदीक्षितकौण्डभट्टाभिमतसम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शः-

सम्प्रदाने चतुर्थी [2-3-18] इति सूत्रेण विधीयमाना या चतुर्थी सा सम्प्रदानचतुर्थी इत्युच्यते। तस्य च सूत्रस्यार्थो भवति सम्प्रदाने चतुर्थी भवति, अतस्तस्याः सम्प्रदानचतुर्थ्याः सम्प्रदानमर्थो भवति। सम्प्रदानत्वं नाम उद्देश्यत्वमतः सम्प्रदानचतुर्थ्याः भट्टोजिदीक्षितमते कौण्डभट्टमते च उद्देश्यत्वमर्थो भवति। तथा च वदति भट्टोजिदीक्षितः- **"आश्रयोऽवधिरुद्देश्यः सम्बन्धः शक्तरेव वा। यथायथं विभक्त्यर्थः सुपां कर्मेति भाष्यतः"**[14]। तट्टीकाकारश्च चाह कौण्डभट्टः- **"उद्देश्यश्चतुर्थ्यर्थः"**[15]। अत्र कौण्डभट्टवचने चतुर्थीपदेन सम्प्रदानचतुर्थी एव ग्राह्या। अथ सम्प्रदाने चतुर्थीति सूत्रेण सम्प्रदाने चतुर्थी भवतीति कृत्वा तस्या अर्थः सम्प्रदानमित्येव वक्तव्यमासीत्। तर्हि कथं प्रोक्तमुद्देश्यत्वं चतुर्थ्यर्थ इति तु नैव वक्तव्यं कारणं हि सम्प्रदानं नाम उद्देश्यत्वमेव भवतीति तत्तद्ग्रन्थेषु सम्प्रदानस्वरूपविचारेण प्रतीयते। अतोऽत्र सम्प्रदानस्वरूपं प्रतिपाद्यते। तथाहि-

भट्टोजिदीक्षिताभिमतसम्प्रदानस्वरूपविमर्शः-

भट्टोजिदीक्षितः सिद्धान्तकौमुद्यां वदति **"कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् [पा0सू0 1-4-32]** इति सूत्रवृत्तौ **"दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्"**। अत्र दानस्य इत्यत्यनेन क्रियामात्रस्य इत्यर्थो विवक्षितः। क्रियामात्रस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्। यथा विप्राय गां ददातीत्यादौ क्रिया दानरूपा तत्कर्म गौः तेन साकं सम्बन्धाय कर्ता विप्रम् अभिप्रैति अतः तत्सम्प्रदानसंज्ञो भवतीति भावः। परन्तु एवं सति आजां ग्रामं नयति इत्यादौ अतिप्रसङ्गो वर्तते, तन्निराकरणाय भट्टोजिदीक्षितो वदति **"यमभिप्रैतीत्युक्त्या हि यमिति निर्दिष्टस्य शेषित्वं कर्मणश्च शेषत्वं लभ्यते"**[16]। इति। एवं च यो हि शेषी भवति तस्यैव सम्प्रदानसंज्ञा भवति। शेषी इत्यस्य च उद्देश्यः इत्यर्थः।

अथ कौण्डभट्टाभिमतसम्प्रदानस्वरूपविमर्शः-

सम्प्रदानस्वरूपं प्रतिपादयितुमाह कौण्डभट्टः- **"कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् इति सूत्रात् कर्मणा करणभूतेन यमभिप्रैति ईप्सति तत् कारकं सम्प्रदानम् इति"**[17]।

अयं भावः- कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानमिति सूत्रे कर्मणेति तृतीयार्थः करणत्वम्, तच्चात्र प्रतियोगित्वरूपम्, अभिप्रैति इत्यस्य सम्बन्धुम् इच्छतीत्यर्थः, तथा च दानकर्म-प्रतियोगिकसम्बन्धनिष्ठप्रकारतानिरूपिका या दातृनिष्ठा इच्छा तन्निरूपितविशेष्यताश्रय इति सूत्रार्थः। विशेष्यतायाश्च प्रकारतानिरूपिताया एव ग्रहणात् तादृशप्रकारतानिरूपितदातृ-निष्ठेच्छीयविशेष्यताश्रयः सम्प्रदानमिति यावत्। तादृशीच्छा च विप्रो गोस्वामी भवतु, इत्याकारा तदीयविशेष्यताश्रयत्वात् विप्राय गां ददाति, इत्यादौ विप्रः सम्प्रदानम्।

अथवा- कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् इति सूत्रे अभिप्रैतीतिशब्दः- सम्बन्धप्रकारकेच्छावाचकः, अभिप्रैति-ईप्सति,

---

12 समयूखभाट्टचिन्तामणिपत्रसंख्या 100/ प्रकाशनवर्षम्-1933/ प्रकाशकः चौखम्बासंस्कृतसीरिजः, वाराणसी।
13 भाट्टतन्त्ररहस्यपत्रसंख्या 118/ प्रकाशनवर्षम्-1970/ प्रकाशकः संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकायः , वाराणसी।
14 वैयाकरणमतोन्मज्जनकारिकसंख्या 2/ पत्रसंख्या 1/ प्रकाशनवर्षम्- 1998/ प्रकाशकः भारतीयविद्यासंस्थानम्, वाराणसी।
15 सुबोधिनीटीकायुतवैयाकरणभूषणसारपत्रसंख्या 185/ प्रकाशनवर्षम्-2001/ प्रकाशकः चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी।
16 रत्नप्रभाटिप्पणीयुतप्रौढमनोरमापत्रसंख्या 729/ प्रकाशनवर्षम्-1997/ प्रकाशकः वाणीविलासप्रकाशनम्, वाराणसी।
17 सुबोधिनीटीकायुतवैयाकरणभूषणसारपत्रसंख्या 186/ प्रकाशनवर्षम्-2001/ प्रकाशकः चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी।

सम्बन्धुमिच्छति, इत्यर्थात्। कर्मणेति सहयुक्ततृतीयार्थः प्रतियोगित्वम्, यमिति कर्मद्वितीयार्थो विशेष्यतात्मकविषयताश्रयः, अभिप्रैतीत्यनेन च अभिप्रैतिकर्तुराक्षेपः। तथा च कर्मप्रतियोगिकसम्बन्धप्रकारककर्तृवृत्तीच्छानिरूपितविशेष्यतात्मकविषयताश्रयो यः स सम्प्रदानम् इति, कर्मप्रतियोगिकसम्बन्धप्रकारिका यद्विशेष्यिकेच्छा स सम्प्रदानमिति वा सूत्रार्थः। यथा विप्राय गां ददातीत्यत्र कर्मीभूतगोप्रतियोगिक-स्वस्वामिभावसम्बन्धप्रकारिका या दानकर्तृवृत्तिः विप्रो गोप्रतियोगिकस्वस्वामिभावसम्बन्धवान् भवतु इतीच्छा तद्विषयो विप्र इति स सम्प्रदानं भवतीति भावः।

अत एव वदति कौण्डभट्टः **''यमभिप्रैति इत्युक्त्या हि यम् इति निर्दिष्टस्य उद्देश्यत्वलक्षणं शेषित्वम्, कर्मणा इति निर्दिष्टस्य गवादेः शेषत्वं च प्रतीयते''**[18]। शेषित्वं च धात्वर्थक्रियाया यत्कर्म तद्वृत्तिः यद्धात्वर्थफलं तत्सम्बन्धजन्यफलाश्रयत्व-प्रकारकेच्छाविशेष्यत्वम्। यथा विप्राय गां ददाति इत्यत्र दानकर्मीभूतगोवृत्तितादृशस्वत्व-सम्बन्धजन्यसुखाश्रयो विप्रो भवतु इत्याकारिका या इच्छा तादृशोच्छाविशेष्यत्वरूपं शेषित्वं विप्रस्य। ततश्च तस्य सम्प्रदानत्वं सिद्ध्यति। एवं कौण्डभट्टेन कथनेनापि सम्प्रदानं नाम शेषि, शेषि एव च उद्देश्य इति कृत्वा सिद्धमिदं यत्सम्प्रदानचतुर्थ्यर्थः उद्देश्यः।

अत्रायं विशेषः

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् इति पाणिनिवचनम्। **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्** इति हि कात्यायनवचनम्। तत्र पाणिनिसूत्रे उभयगतिरिह भवतीति परिभाषाकारणात् कर्मपदं कृत्रिमाकृत्रिमोभयबोधकः, अर्थात् शास्त्रप्रसिद्धकर्म-संज्ञकार्थबोधकः, लोकप्रसिद्धक्रियारूपकर्मार्थ-बोधकश्च। लोके हि कर्मपदेन क्रिया गृह्यते, यथा त्वं किं कर्म करोषीत्यस्य त्वं कां क्रियां करोषीत्यर्थः। एवं च सूत्रे उभयार्थकस्य कर्मपदस्य ग्रहणात् वार्तिकं गतार्थमिति दिक्। दृश्यते हि अनेकत्र लोकप्रसिद्धक्रियार्थबोधककर्मपदस्य शास्त्रे ग्रहणम्। यथा कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः इत्यादि। अत्र उभयगतिरिह भवतीत्यनेनेष्टसिद्धिः। उभयगतिः उभयार्थावगतिः। अत्र प्रमाणम्- द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा इति। अन्यथा संख्याया अवयवे तयप् इत्यत्र शास्त्रीयसङ्ख्याया एव ग्रहणे द्वित्रिशब्दाभ्यां तदप्राप्त्या तस्यायज्विधिवैयर्थ्यं स्यादिति दिक्। एवं च सूत्रेणैवोभयत्रेष्टसिद्धिः, तस्मात्प्रथग्वचनं नैव कर्तव्यम्।

नागेशभट्टेनापि वृत्तिकारमतं पूर्वपक्षरूपेणोपन्यस्तम्- **''यत्तु वृत्तिकाराः- सम्यक् प्रदीयते यस्मै तत्सम्प्रदानमित्यन्वर्थसंज्ञेयम्। तथा च गोनिष्ठस्वस्वत्वनिवृत्तिसमानाधिकरणपरस्वत्वोत्पत्त्यनुकूलव्यापाररूपक्रियोद्देश्यस्य ब्राह्मणादेरेव सम्प्रदानत्वमिति''**[19]।

कौण्डभट्टेनापि वृत्तिकारमतमेवमेव प्रोक्तम्- **''वृत्तिकारास्तु सम्यक्प्रदीयते यस्मै तत्सम्प्रदानम् इत्यन्वर्थसंज्ञया स्वस्वत्वनिवृत्तिपर्यन्तमर्थं वर्णयन्तो रजकस्य वस्त्रमित्याहुः''**[20]।

सम्प्रदानभेदाः-

सम्प्रदानं च त्रिविधम्- अनिराकर्तृसम्प्रदानम् - प्रेरयितृसम्प्रदानम् - अनुमन्तृसम्प्रदानम्, चेति। अत एवोक्तं हरिणा वाक्यपदीये-

अनिराकरणात् कर्तुस्त्यागाङ्गं कर्मणेप्सितम्।
प्रेरणानुमतिभ्यां च लभते सम्प्रदानताम्[21]।।

अस्यार्थः- त्यागाङ्गं सत् यत्कर्मणा सम्बन्धुम् अभिप्रेयमाणं तत्कारकम्, कर्तुरनिराकरणात्, तथा च कर्तुः प्रेरणया, कर्तुरनुमतिप्रदानेन च सम्प्रदानतां लभते, इत्यर्थः।

अनिराकर्तृसम्प्रदानम्- प्रवृत्तिनिवृत्त्यनुकूलव्यापारशून्यत्वम् अनिराकर्तृ-सम्प्रदानत्वम्। यथा- सूर्याय अर्घं ददाति। अत्र सूर्यः दीयमानमर्घं न निराकरोति, न वा तद्दातारं निराकरोति, नापि प्रेरयति, अतोऽत्र प्रवृत्तिनिवृत्त्यनुकूलव्यापारशून्यत्वात् सूर्यः अनिराकर्तृसम्प्रदानम्।

प्रेरयितृसम्प्रदानम्- प्रकृतधात्वर्थकर्मजन्यफलभागितयेच्छाविषयत्वे सति कर्तृ-सम्बन्धित्यागादिविषयकेष्टसाधनता-बोधौपयिकव्यापारवत्त्वं प्रेरयितृसम्प्रदानत्वम्। यथा विप्राय गां ददाति नृपः। अत्र दाधात्वर्थगोरूपकर्मजन्यफलभागितया इच्छाविषयो विप्रः, किन्च विप्रे नृपरूपकर्तृवृत्तित्यागादिविषयकेष्टसाधनता तद्बोधोपयिकव्यापारवत्त्वमपि विप्रे। अतोऽत्र विप्रः प्रेरयितृसम्प्रदानम्।

अनुमन्तृसम्प्रदानम्-यथा उपाध्याय गां ददाति। अत्र हि उपाध्यायो न शिष्यं गोदाने प्रवर्तयति न वा निवर्तयति न वा निषेधति, किन्तु तुभ्यं मया गौर्दीयते गृहाण, इत्युक्तः देहि इत्यनुमन्यते। अतोऽत्र अनुमन्तृसम्प्रदानम्।

अत्रायं विशेषः

भट्टोजीदीक्षितेन यद्यपि सम्प्रदानचतुर्थीविभक्तेरर्थ उद्देश्य इति प्रोक्तम्। किन्तु नह्येकं सूत्रं सम्प्रदानसंज्ञाविधायकं किन्तु नाना सूत्राणि सन्ति। तत्र **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् [2-3-18]** इति सूत्रविहितसम्प्रदानसंज्ञकात् विहितचतुर्थीविभक्तेस्तु उद्देश्य अर्थो वर्तते। एवं चास्योदाहरणस्य विप्राय ददातीत्यस्य **विप्रोद्देश्यकं दानम्** इति बोधः। **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः [2-3-18]** इदमपि

18 बृहद्वैयाकरणभूषणपत्रसंख्या 117/ प्रकाशनवर्षम् 1985/ प्रकाशकः चौखम्बामरभारतीप्रकाशनम् वाराणसी।
19 वंशीटीकायुतापरमलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 175./ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।
20 सुबोधिनीटीकायुतवैयाकरणभूषणसारपत्रसंख्या 189/ प्रकाशनवर्षम्-2001/ प्रकाशकः चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, वाराणसी।
21 अम्बाकर्त्रीयुतवाक्यपदीयतृतीयकाण्डद्वितीयभागपत्रसंख्या 191/ प्रकाशनवर्षम्-1997/ प्रकाशकः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसी।

सम्प्रदानसंज्ञाविधायकं सूत्रं वर्तते। एतत्सूत्रविहितसम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेः नहि उद्देश्यो वाच्यः किन्तु स्वरूपसम्बन्धो वाच्यः, कारणं ह्येतत्सूत्रं शेषे षष्ठी [2-3-18] इति सूत्रस्यापवादभूतं वर्तते, ततश्च उत्सर्गसमानदेशाः अपवादाः इति न्यायेन तस्याः सम्बन्धार्थकत्वौचित्यात्। एवं चैतदोदाहरणस्य हरये रोचते भक्तिः इत्यस्य हरिसम्बन्धिभक्तिविषया या प्रीतिः तदनुकूलो भक्तिकर्तृको व्यापारः, इति बोधः। **श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः [2-3-18]** इदं सूत्रं **कर्तुरीप्सिततमं कर्म [2-3-18]** इति सूत्रस्यापवादभूतं वर्तते, ततश्चैतत्सूत्रविहितसम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेः कर्म वाच्यः। ततश्च गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते इत्यस्य गोपीकर्तृका स्मरहेतुका कृष्णकर्मकबोधफलिका स्तुतिः, इति बोधः। **धारेरुत्तमर्णः [2-3-18]** इदं सूत्रं शेषे षष्ठीति सूत्रस्यापवादभूतं वर्तते तस्मादेतत्सूत्रविहितसम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेः सम्बन्धो वाच्यः। एवं च भक्ताय मोक्षं हरिः धारयति इत्यस्य भक्तसम्बन्धिमोक्षकर्मकवस्थित्यनुकूलो व्यापारः, इति बोधः। **स्पृहेरीप्सितः [2-3-18]** इदमपि सूत्रं शेषे षष्ठीति सूत्रस्यापवादभूतं वर्तते, ततश्चैतत्सूत्रविहितसम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेरर्थः सम्बन्धः। एवं च पुष्पेभ्यः स्पृहयति, इत्यस्य पुष्पसम्बन्धीच्छा। **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः [2-3-18]** तत्र क्रुधद्रुह, इत्येतौ धातू अकर्मकौ तस्मादेतयोः प्रयोगे शेषे षष्ठीति सूत्रस्यापवादभूतमिदं सूत्रमिति कृत्वा हरये क्रुध्यति, हरये द्रुह्यति, इत्यादौ चतुर्थ्यर्थः सम्बन्धः। ततश्च हरये क्रुध्यति इत्यस्य हरिसम्बन्धी क्रोधः। हरये द्रुह्यति, इत्यस्य हरिसम्बन्धी द्रोहः। ईर्ष्य असूया इत्यनयोः योगे कर्मसंज्ञाप्राप्ता वर्तते, अतस्तयोर्योगे **कर्तुरीप्सिततमं कर्म [2-3-18]** इति सूत्रस्यापवादभूतमिदं सूत्रं तस्माद् हरये ईर्ष्यति, हरये असूयति, इत्यादौ कर्म चतुर्थ्यर्थः। एवं च हरये ईर्ष्यति इत्यस्य हरिकर्मकोत्कर्षविषयो द्वेषः। हरये असूयति इत्यस्य हरिकर्मकगुणविषयकदोषाविष्करणम्। **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः [2-3-18]** , इदमपि सूत्रं शेषे षष्ठीति सूत्रस्यापवादभूतं वर्तते, तस्मादेतत्सूत्रविहितसम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेरर्थः सम्बन्धः। **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता [2-3-18]** इदं सूत्रं **स्वतन्त्रः कर्ता [2-3-18]** इति सूत्रस्यापवादभूतं वर्तते, तस्मादेतत्सूत्रविहितसंम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेरर्थः कर्ता इति। **अनुप्रतिगृणश्च [2-3-18]** इदं सूत्रं कर्मसंज्ञाया अपवादभूतं तस्मादेतत्सूत्रविहितसंम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेरर्थः कर्म। प्रक्रियणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्, इदं च सूत्रं साधकतमं करणमिति सूत्रस्यापवादभूतं तस्मादेतत्सूत्रविहितसंम्प्रदानसंज्ञकात् विधीयमानचतुर्थीविभक्तेः करणमर्थः।

अथ नागेशभट्टाभिमतसम्प्रदानचतुर्थ्यर्थविमर्शः-

नागेशभट्टमते सम्प्रदानचतुर्थीविभक्तेः सम्प्रदानत्वशक्तिमान् क्रियाकारकभावः सम्बन्धश्चार्थो वर्तते। बृहच्छब्देन्दुशेखरे वदति विप्राय गां ददाति, इति वाक्यस्यार्थकरणप्रसङ्गे **"दाधात्वर्थश्च स्वत्व स्वस्वत्वनिवृत्त्युभयानुकूलो व्यापारः। तदेकदेशे स्वत्वे चतुर्थ्यर्थस्योद्देश्यस्य निरूपकतयाऽन्वयः। एवं च विप्रोद्देश्यकगोनिष्ठस्वस्वस्वस्वत्व-निवृत्युभयानुकूलो व्यापार इति बोधः। उद्देश्यश्चतुर्थ्यर्थः। उद्देश्यत्वं चाखण्डोपाधिः"**[22]। अत एव स लघुशब्देन्दुशेखरे वदति- **"सम्प्रदानत्वशक्तिमान् सम्प्रदानचतुर्थ्यः। स एवोद्देश्य इत्युच्यते, क्रियाकारकभावः सम्बन्धश्च तदर्थः"**[23]। वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषायामपि वदति सः- **"कारकचतुर्थ्याः सम्प्रदानमर्थः, चतुर्थी सम्प्रदाने इति सूत्रात्"**[24]। वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषायां एकस्मिन् स्थले वदति- **"कारकचतुर्थ्याः सम्प्रदानत्वशक्तिमानर्थः"**[25]। पुनः द्वितीये स्थले वदति- **"क्रियाकारकभावः सम्बन्ध इति द्वितीयोक्तदिशोचितम्"**[26]। परमलघुमञ्जूषायां वदति नागेशः- **"सम्प्रदानचतुर्थ्य उद्देश्यः"**[27]। एतत्प्रतीकमुपादाय तट्टीकाकारो वंशीधरमिश्रो वदति- **"सम्प्रदानत्वशक्तिमान् सम्प्रदानचतुर्थ्यः, स एवोद्देश्य इत्युच्यते, क्रियाकारकभावः सम्बन्धश्च तदर्थः"**[28]। तस्मादिदं प्रतिफलति यन्नागेशमते सम्प्रदानचतुर्थीविभक्तेः सम्प्रदानत्वशक्तिमानर्थः क्रियाकारकभावः सम्बन्धश्चार्थो वर्तते, इति भावः।

अथ सम्प्रदानस्वरूपविमर्शः-

नागेशभट्टः प्राह सम्प्रदानलक्षणं परमलघुमञ्जूषायाम्- **"क्रियामात्रकर्मसम्बन्धाय क्रियायामुद्देश्यं यत् कारकं तत्त्वं तत्सम्प्रदानत्वम्"**[29]। अत्र लक्षणे मात्रशब्दः साकल्यवाचकः, मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे चेति कोषात्। एवञ्च सकलक्रियाकर्मसम्बन्धाय क्रियायामुद्देश्यं यत् कारकं तत्वं सम्प्रदानत्वमिति लक्षणं प्रतिफलति। यथा ब्राह्मण गां ददाति इत्यत्र दानक्रियायाः कर्म गौः तस्य सम्बन्धाय दानक्रियायामुद्देश्यभूतो ब्राह्मणः तच्च कारकमपि अतस्तस्य सम्प्रदानत्वम्, सम्प्रदानत्वाच्च तत्र चतुर्थी सम्प्रदाने इति सूत्रेण चतुर्थी भवति। एवं चैत्रो मैत्राय वार्ताः कथयति, इत्यत्र कथनक्रियया: कर्म वार्ता तस्य सम्बन्धाय कथनक्रियायामुद्देश्यभूतो मैत्रः तच्च कारकमपि अतस्तस्य सम्प्रदानत्वं सिध्यति, ततश्च तस्माच्चतुर्थी भवतीति भावः। तथा चाह नागेशः- **"यथा ब्राह्मणाय गां ददातीत्यादौ**

---

22 बृहच्छब्देन्दुशब्देन्दुशेखरद्वितीयभागपत्रसंख्या 882/ प्रकाशनवर्षम्-1998/ प्रकाशकः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
23 दीपिकाटीकायुतलघुशब्देन्दुशेखरपत्रसंख्या 487/ प्रकाशनवर्षम्-2007/ प्रकाशकः चौखम्बाप्रकाशनम्, वाराणसी।
24 वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषापत्रसंख्या 172/ प्रकाशनवर्षम्-1977/ प्रकाशकः-सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी, उत्तरप्रदेशः।
25 वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 1261/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः = राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली।
26 वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 1263/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः = राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली।
27 वंशीटीकायुतापरमलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 176/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः = चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी, उत्तरप्रदेशः।
28 वंशीटीकायुतापरमलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 176/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।
29 वंशीटीकायुतापरमलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 173/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।

दानक्रियाकर्मीभूतगोसम्बन्धाय ब्राह्मणो दानक्रियोद्देश्यः गोब्राह्मणयोः स्वस्वामिभावः सम्बन्धः। चैत्रो मैत्राय वार्ताः कथयतीत्यत्र मैत्रवार्तयोर्ज्ञेयज्ञातृभावः सम्बन्धश्च"[30]।

अत्र वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा-

वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषायामपि वदति नागेशभट्टः- **"कारकचतुर्थ्याः सम्प्रदानत्वशक्तिमानर्थः। सा शक्तिश्च तत्तद्धात्वर्थकर्मनिष्ठफलनिरूपकत्वेन इच्छाविषयो यस्तन्निष्ठः। कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानमिति सूत्रात्"**[31]। एवं चानेन वचनेन तत्तद्धात्वर्थकर्मनिष्ठफलनिरूपकत्वेनेच्छाविषयत्वं सम्प्रदानत्वम् इति लक्षणं प्रतिफलति।

अत्र वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा-

वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषायां सम्प्रदानलक्षणप्रतिपादनप्रसङ्गे वदति नागेशः- **"कारकचतुर्थ्याः सम्प्रदानमर्थः, चतुर्थी सम्प्रदाने इति सूत्रात्। सम्प्रदानबोधकञ्च कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् इति सूत्रम्। धात्वर्थकर्मणा सम्बन्द्धुमिच्छति सम्प्रदानमिति तदर्थः। कर्मसम्बन्धश्च कर्मनिष्ठफलनिरूपकत्वादि। एवञ्च तत्तद्धातुकर्मनिष्ठफलनिरूपकत्वादिना इच्छाविषयस्तत्तद्धातु-सम्प्रदानमिति फलितम्"**[32]।

अत्र बृहच्छब्देन्दुशेखरः-

नागेशभट्टः तत्र कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् इति सूत्रस्यार्थकरणप्रसङ्गे वदति- **"सम्बद्धुमिति शेषः। अभिप्रैति, इच्छतीत्यर्थः। कर्मणा सम्बन्धश्च स्वत्वादिरूपः। एवं च दाधातुकर्मसम्बन्धितयेच्छाविषयोऽर्थः सम्प्रदानमिति फलितम्। अयमेव च उद्देश्य इत्युच्यते, शेषीति च। एवं च कर्मकारकान्वितक्रियोद्देश्यः सम्प्रदानमिति फलितम्"**[33]। यथा विप्राय गां ददातीत्यत्र कर्मकारकं गौः, तदन्विता फलरूपा स्वस्वत्वध्वंससमानाधिकरणपरस्वस्वत्वोत्पत्तिरूपा क्रिया तदुद्देश्यः विप्रो वर्तते, इति कृत्वा तस्य सम्प्रदानत्वं सिध्यतीति भावः।

अत्रायं विशेषः।

नागेशभट्टमते सम्प्रदानमात्रात् विधीयमानायाः चतुर्थीविभक्तेरर्थः सम्प्रदानत्वशक्तिमानेव कारणं हि तेषां तात्पर्यं वर्तते यत्तत्तत्सम्प्रदानसंज्ञाविधायकेन शास्त्रेण स्वस्वोद्देशे सम्प्रदानशक्तिमत्त्वं बोध्यते। अतस्तदेव सम्प्रदानचतुर्थीविभक्तेरर्थ इति भावः। अत एव प्रोक्तं तैः **"तत्तत्संज्ञासूत्रैस्तत्तदर्थे तत्तत्कारक-शक्तिमत्त्वबोधनात्"**[34]। अत एव तत्तद्वाक्यानां शाब्दबोधं तथैव वदति सः। विप्राय ददातीत्यस्य **विप्रसम्प्रदानकं दानम्** इति। पत्ये शेते इत्यस्य **पतिसम्प्रदानकं शयनम्** इति। हरये रोचते भक्तिरित्यस्य **हरिसंम्प्रदानिका भक्तिकर्तृका रुचिः** इति बोधः। गोपी कृष्णाय श्लाघते इत्यस्य **गोपीकर्तृका स्मरहेतुका कृष्णसम्प्रदानिका अर्थात् कृष्णवृत्तिबोधविषया स्तुतिः** इति बोधः। **गोपीकर्तृका कृष्णसम्प्रदानिकाअर्थात्कृष्णवृत्तिबोधविषयात्मकर्मकतथा-वस्थानानुकूला क्रिया** इति बोधः। कृष्णाय तिष्ठतीत्यस्य **कृष्णसम्प्रदानकबोधनानुकूला स्थितिः**, इति बोधः। कृष्णाय शपते इत्यस्य **कृष्णसम्प्रदानकबोधानुकूलं शपथकरणम्** इति बोधः। भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः इत्यस्य **हरिकर्तको भक्तसम्प्रदानको मोक्षकर्मकावस्थित्यनुकूलो व्यापारः**, इति बोधः। पुष्पेभ्यः स्पृहयतीत्यस्य **पुष्पसम्प्रदानिकेच्छा**, इति बोधः। हरये क्रुध्यतीत्यस्य **हरिसम्प्रदानकः क्रोधः**, इति बोधः। हरये द्रुह्यतीत्यस्य **हरिसम्प्रदानको द्रोहः**। हरये ईर्ष्यतीत्यस्य **हरिसम्प्रदानिका ईर्ष्या**, इति बोधः। हरये असूयतीत्यस्य **हरिसम्प्रदानिकी असूया** इति च बोधः। कृष्णाय राध्यति ईक्षते वा इत्यस्य **कृष्णसम्प्रदानकमर्थात्कृष्ण-सम्बन्धिप्रश्नविषयशुभाशुभपर्यालोचनम्** इति बोधः

अत्र शाब्दबोधः

यजमानो विप्राय गां ददाति। अत्र यजमान सु विप्र ङे गो अम् दा ति, इत्येतानि पदानि सन्ति। तिप्रत्ययस्यार्थः कर्ता, तत्र प्रथमार्थस्य राज्ञः अभेदसम्बन्धेनान्वयः। दाधात्वर्थः स्वस्वत्वनिवृत्तिसमानाधिकरणपरस्वत्त्वोत्पत्त्यनुकूलो व्यापारः। तत्र तिबर्थस्य कर्तुः क्रियाकारकभावसम्बन्धेन धात्वर्थे व्यापारे अन्वयः। अमर्थः कर्मत्वशक्तिमान् तत्र प्रकृत्यर्थस्य गोः अभेदसम्बन्धेनान्वयः। द्वितीयार्थस्य कर्मत्वशक्तिमतः धात्वर्थे फले अन्वयः। ङेप्रत्ययस्य सम्प्रदानत्वशक्तिमान् अर्थः, तत्र प्रकृत्यर्थस्य विप्रस्याभेदसम्बन्धेनान्वयः, सम्प्रदानत्वशक्तिमतश्च क्रियाकारकभावसम्बन्धेनान्वयः, धात्वर्थव्यापारे एवान्वयः। ततश्च निरुक्तवाक्यात् यजमानाभिन्नकर्तृविशिष्टः गवाभिन्नकर्मत्वशक्तिमद्विशिष्टस्वस्वत्वनिवृत्तिसमानाधिकरण-परस्वत्त्वोत्पत्त्यनुकूलःविप्राभिन्नसम्प्रदानत्वशक्तिमद्विशिष्टो वर्तमानकालिको व्यापारः, इति शम्।

---

30 वंशीटीकायुतापरमलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 174/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।

31 वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 1261/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः = राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली।

32 वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषापत्रसंख्या 172/ प्रकाशनवर्षम्-1977/ प्रकाशकः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।

33 बृहच्छब्देन्दुशब्देन्दुशेखरद्वितीयभागपत्रसंख्या 882/ प्रकाशनवर्षम्-1998/ प्रकाशकः सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।

34 वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषापत्रसंख्या 1204/ प्रकाशनवर्षम्-2006/ प्रकाशकः = राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली।